सेव्यमानौ सुखस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः ।

पुष्परेणूत्किरैर्वातैराधूतवनराजिभिः ।।38।।

अन्वय सुखस्पर्शैः शालनिर्यासगन्धिभिः पुष्परेणूत्किरैः आधूतवनराजिभिः वातैः सेव्यमानौ (तौ जग्मतुः)।

अनुवाद (शीतलता के कारण सुखदायक स्पर्श वाली, साल वृक्ष के गोंद की गंध वाली, फूल के पराग को उड़ाने वाली और वन के वृक्ष की पंक्तियों को धीरे-धीरे कंपा देने वाली (ऐसी) वायु द्वारा जिनकी सेवा की जा रही थी (ऐसे) वे दोनों आश्रम की ओर जा रहे थे।

टिप्पणियां

सेव्यमानौ सेव् धातु कर्मणि लट् शानच; सेवा किए जाते हुए।

सुख-स्पर्शैः सुखः स्पर्शः येषां ते (बहुव्रीहि समास) तैः। जिसका स्पर्श सुखदायक है। 'वातैः' का विशेषण है।

विशेष वायु में तीन गुण होते हैं। यह शीतल, सुगन्धयुक्त तथा मन्द होनी चाहिए। इन तीन गुणों वाली वायु उत्तम मानी जाती है। वशिष्ठ के आश्रम में जाते हुए दिलीप के लिए वायु सर्वथा उत्तम थी। उसका स्पर्श सुखदायक था। इससे प्रतीत होता है कि वह शीतल थी। उसमें साल वृक्षों के गोंद की गंध और फूलों का पराग मिला था। इससे प्रतीत होता है कि वह सुगन्धित थी। वह जंगल के वृक्षों को धीरे.धीरे हिला रही थी, इसमें प्रतीत होता है कि वह अनुकूल तथा मन्द थी। कालिदास का समूचा काव्य प्रकृति

में रमा काव्य है। सूक्ष्म-से-सूक्ष्म तन्तु को कालिदास की संवेदना पकड़ लेती है। उनके काव्य में केवल प्रकृति का मानवीकरण नहीं मिलता बल्कि मनुष्य का भी प्रकृतिकरण दृष्टिगोचर होता है। इसीलिए कालिदास के काव्य में फूहड़ रोमांटिकता नहीं मिलती। उसमें 'क्लासिकी' और 'रोमांटिक' दोनों धाराओं के स्वस्थ तत्त्वों का संतुलित सन्निवेश मिलता है। ठीक इसी प्रकार की सुखस्पर्श-सौगन्ध्यादियुक्त वायु का वर्णन महाकवि दिङ्नागकृत कुन्दमाला नामक नाटक में भी है, देखिए-

आदाय पङ्कजवनान्मकरन्दगन्धान् तव सभाजनकाङ्क्षयेव। (कुन्दमाला, प्रथम अंक)

शाल शालानां निर्यासः (शाल नामक वृक्षों की गोद) शाल-निर्यासः (षष्ठी तत्पुरुष), तस्य गन्धः शालनिर्यासगन्धः स अस्ति एषाम् इति शालनिर्यासगन्धिनः; तैः (बहुव्रीहि)।

पुष्प पुष्पाणां रेणव पुष्परेणवः तेषां उत्किराः; तैः फूलों की पराग (धूल) को उड़ाने वाली। 'वातैः' का विशेषण है।

आधूत वनानां राजयः इति वनराजय (षष्ठी तत्पुरुष), आधूता (आ धू क्त) वनराजयः यैः ते (बहुव्रीहि), तै वन के वृक्षों की पंक्तियों को धीरे-धीरे कंपा देने वाली। 'वातैः' के विशेषण है।